एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्वार फली की खेती

(*राम लखन मीना)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: meenahort7244@gmail.com

ग्वार खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली एकवर्षीय बहुउद्देश्य फसल है। ग्वार की खेती सब्जी, चारा, दाना हरी खाद आदि के लिए की जाती है। ग्वार फली की सब्जी शाकाहारी लोगों का संतुलित आहार है। प्रोटीन और वसा युक्त होने के कारण इसे सब्जियों में प्रमुखता दी जाती हैं। पशुओं के लिए पोस्टिक चारा व दाना दोनों इस फसल से मिलता है। हरी फलियों के 100 ग्राम भाग में 81.0 ग्राम पानी, 3.2 ग्राम प्रोटीन, 0.4 ग्राम वसा, 1.4 ग्राम खनिज, 3.2 ग्राम रेशा और 10.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है ग्वार के दाने में ग्वार गम (गोंद) 30-35% पाया जाता है।

जलवायु

ग्वार एक सूखा सहन करने वाली वह गर्म जलवायु की फसल है। इसकी खेती 30-40 सेंमी औसत वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। इसके बीजों के अंकुरण व जड़ों के विकास के लिए 25-30°c तापमान उपयुक्त है। ग्वार की खेती कम वर्षा और विपरीत परिस्थितियों वाली जलवायु में भी आसानी से की जा सकती हैं। यह सूखा सहन करने वाली फसल है। इसलिए राज्य के शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्र में इसकी खेती अधिक की जाती है।

मृदा एवं खेत की तैयारी

ग्वार की खेती के लिए उचित जल निकास वाली दोमट व बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम रहती हैं। हल्की क्षारीय वह लवणीय भूमि जिसका PH मान 7.5-8.5 तक हो वहां पर ग्वार की की खेती आसानी से की जा सकती हैं। ग्वारफली की जायद की फसल बुवाई हेतु खेत को नवम्बर से दिसंबर में जुताई कर खरपतवारो से मुक्त रखना चाहिए। इस समय खेत की जुताई करने से सर्दी की ऋतु में होने वाली बरसात का पानी खेत में ही संचित रहता है। जो कि जायद की फसल के लिए लाभदायक रहता हैं। ग्वार की फसल के लिए गर्मियों में एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से व एक से दो जुताई देशी हल या हैरो से कर पाटा लगाकर भूमि तैयार कर लेते हैं।

उन्नत किस्में

पूसा मौसमी, पूसा सदाबहार, पूसा नवबहार, शरद बहार, दुर्गा बहार, M - 83, IC - 11388, HHG - 13 आदि।

बीजदर एवं बीजोपचार

ग्वार की फसल का बीज सब्जियों की खेती के लिए 15-20 किलोग्राम तथा चारे वाली फसलों के लिए 40-45 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से बोया जाता है। ग्वार की फसल में बीज उपचार के

लिए 2 ग्राम केप्टान या बाविष्टिन नामक दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करते हैं। इसके बाद बुवाई से पहले बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करते हैं।

बुवाई का समय एवं विधि

ग्वार फली के उत्पादन हेतु जायद की फसल के लिए बुवाई फरवरी से मार्च और वर्षा ऋतु की फसल के लिए बुवाई जून से जुलाई माह में करते हैं। ग्वार फली की अच्छी पैदावार के लिए हमेशा पंक्तियों में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई के लिए सीड ड्रिल का इस्तेमाल बहुत अच्छा रहता है। ग्वार फली की बुवाई कतार से कतार 35-45 सेंमी की दूरी एवं पौधे से पौधे 10-15 सेंमी की दूरी पर करनी चाहिए।

खाद और उर्वरक

ग्वार फली की खेती के लिए 200 से 250 क्विंटल गोबर की सड़ी खाद, 25 से 30 किग्रा.नाइट्रोजन, 40 से 50 किग्रा.फास्फोरस, 20 किग्रा. सल्फर व 5 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम तैयारी के समय भूमि में डालना चाहिए। गोबर की खाद को बुवाई के 4 सप्ताह पूर्व खेत में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

सिंचाई

ग्वार की ग्रीष्मकालीन फसल में अच्छी गुणवत्ता युक्त पैदावार के लिए सिंचाई जल प्रबंधन बहुत ही जरूरी है। इस फसल में सिंचाई 7 से 10 दिन के नियमित अंतराल पर करनी चाहिए। सिंचाई हल्की तथा कम गहरी होनी चाहिए।

अंतरा कृषि

ग्वार फली की फसल के साथ खरपतवार भी बुवाई के 5 से 6 दिन बाद ही निकल आते हैं। इन खरपतवारो को सही समय पर निराई गुड़ाई करके खत्म कर देना चाहिए। फसल बोने के 20 से 25 दिन तक खेत खरपतवारो से पूर्ण रूप से मुक्त होना चाहिए। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए बेसालीन को 1.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व खेत में मिला देना चाहिए। एवं एलाक्लोर 1.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और नाइट्रोफेन 3.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से अंकुरण से पहले छिड़काव करें।

तुड़ाई और पैदावार

ग्वारफली को पूरी तरह तैयार होने पर मुलायम अवस्था में ही तोड़ लेना चाहिए। नर्म, कच्ची, हरी फलियों की तुड़ाई नियमित रूप से 4 से 5 दिन के अंतराल पर करें। प्राय: बुवाई के 45 से 60 दिन के बाद फलियां तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं फसल की पैदावार भूमि की उर्वरता, फसल की किस्म व देखभाल पर निर्भर करती है। अगर अच्छी देखभाल की जाए तो 60-80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरी फली की उपज ली जा सकती हैं।

पादप संरक्षण

सफेद मक्खी या मोयला :-यह कीट पौधे के कोमल भागों का रस चूस कर फसल को हानि पहुंचाता है। इसके नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस या इमिडाक्लोप्रिड कीटनाशक की आधा लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

कातरा :-इस कीट की लट प्रारंभिक अवस्था में फसल के पौधों को खाकर नुकसान पहुंचाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए आसपास सफाई रखनी चाहिए। इसके रासायनिक नियंत्रण हेतु मिथाइल पैराथीयान या क्यूनोलफॉस 1.5 % चूर्ण की 20 से 25 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से भुरखानी चाहिए।

दीमक :-यह कीट फसल के पौधों की जड़ों को खाकर नुकसान पहुंचाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए बुवाई के पहले अंतिम जुताई के समय खेत में क्यूनालफॉस 1.5 % या क्लोरोपायरीफॉस पाउडर 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाना चाहिए। बुवाई के समय बीज को क्लोरोपाइरीफॉस कीटनाशक की 2 मि.ली. मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

चूर्णील आसिता रोग :-इस रोग से प्रभावित पौधे पर सफेद चूर्णी धब्बे दिखाई देने लगते हैं। इसके नियंत्रण हेतु केराथेन एल सी 40 मि.ली. 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। या 20 से 25 किलोग्राम गंधक के चूर्ण का प्रति हेक्टेयर की दर से भुरखाव करें।

जीवाणु अंगमारी :-इस रोग से प्रभावित पौधे की पत्तियों पर काले भूरे रंग के धब्बे दिखाई देने लगते हैं। जो बढ़कर पूरी पत्ती को ढक लेते हैं। इसकी रोकथाम के लिए बीज को एक घंटा 30 मिनट तक स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के 500 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में भिगोकर छाया में सुखाकर बुवाई करें। इस रोग के लक्षण दिखाई देने पर 2.5 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन एवं कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 30 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी या 2 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड व 2 ग्राम मैनकोज़ेब को छिड़काव से आधा घंटा पूर्व मिलाकर छिड़काव करें।

जड़ गलन :-इस रोग से प्रभावित पौधे की जड़ भूरी व काली पड़कर गलने लगती हैं। इसके उपचार के लिए बीजों को बुवाई से पूर्व कार्बोक्सिन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

मोजैक :-यह एक विषाणु जनित रोग हैं। जो सफेद मक्खी कीट से फैलता है। इस रोग से प्रभावित पौधे को उखाड़ कर जला देना चाहिए। एवं कीट नियंत्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई सी 1.5 मिलीलीटर दवा प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।